हरी तुम हरो जन की भीड़

हरी तुम हरो जन की भीड़ ।
द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढाओ चीर ॥

भक्त कारन रूप नर हरी धरेओ आप शरीर ।
हिरण्यकश्यप मार लीन्हो धरेओ नहीं धीर ॥

बुडते गजराज राख्यो कियो बाहर नीर ।
दासी मीरा लाल गिरधर दुख जहाँ तहां भीड़ ॥

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/357/title/hari-tum-haro-jan-ki-bheed

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |